P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनपद रुद्रप्रयाग के जखोली विकासखण्ड के प्राथमिक विद्यालयों का सत्र 2013–2014 से 2017–2018 तक नवीन नामांकन के संदर्भ में अध्ययन

सारांश

यदि कोई व्यक्ति रुपवान, यौवन से परिपूर्ण और उच्च कुल में जन्म लिया हुआ भी है किन्तु यदि विद्याहीन है, तो वह किसी सुगंन्धरहित पुष्प के समान है, जो शोभा नहीं दे सकता। उपरोक्त पंक्तियां मनुष्य जीवन में शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करती हैं। शिक्षा के तीन स्वरूप देखने को मिलते हैं। औपचारिक शिक्षा, आनौपचारिक शिक्षा एवं निरौपचारिक शिक्षा। औपचारिक शिक्षा विधिवत स्कूल में दी जाने वाली वह शिक्षा है जो प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च स्तरों में बंटी है।

प्राथमिक स्तर विद्यार्थी जीवन के शिक्षा काल का वह काल है जिसमें उसके भावी जीवन की नींव रखी जाती है। शिक्षा के प्रति जागरूकता के अभाव में पूर्व में प्राथमिक स्तर में नवीन नामांकन अधिक नहीं होते थे। समय के साथ इसमें बढोतरी आयी। आज भारी संख्या में प्राथमिक स्तर पर छात्र नामांकित हैं। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद रुद्रप्रयाग के जखोली विकासखण्ड के प्राथमिक विद्यालयों का सत्र 2013–2014 से 2017–2018 तक नवीन नामांकन के संदर्भ में अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : रूद्रप्रयाग, जखोली, प्राथमिक विद्यालय, नामांकन।

राकेश नेगी
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

चारु शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

प्रस्तावना

रुपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।

अर्थात् रुपवान, यौवन से परिपूर्ण, उच्च कुल में जन्म लिया हुआ व्यक्ति भी यदि विद्याहीन है, तो वह सुगंन्धरहित केसुड़े के फूल के समान है। जो शोभा नहीं दे सकता।उपरोक्त श्लोक मनुष्य जीवन में शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है।

शिक्षा प्रकश का अनन्त स्रोत है। जो मानव जीवन को सुसंस्कृत एवं उन्नत बनाती है। किसी भी राष्ट्र को विकसित करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसके अलावा किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक, तथा राजनैतिक विकास भी शिक्षा पर निर्भर करता है, शिक्षा के माध्यम से ही बौद्धिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों को तैयार किया जाता है। जो राष्ट्र हित को देखकर देशे के विकास के लिए हमेशा कार्य करते हैं। इसी को दृष्टिगत रखते हुए समाज द्वारा शिक्षा तंत्र को विकसित करने हेतु औपचारिक शिक्षाा की व्यस्था की गई है। औपचारिक शिक्षा उच्च शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा के रूप में विद्यालयों में दी जाती है, प्राथमिक शिक्षा बालक के भविष्य के बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इस शिक्षा के अन्तर्गत बालक पढ़ना–लिखना तथा उसके अन्दर विभिन्न कौशलों का निर्माण किया जाता है, ताकि वह अपने आगे की पढ़ाई को आसानी से पूरा कर सके। प्राथमिक शिक्षा सभी बच्चों को सुलभ हो सके इसके लिए विभिन्न देशों की तरहे हमारे देश में अनेक प्रयास किये गये हैं इन प्रयासों में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, मध्याहन भोजन योजना, सर्वशिक्षा अभियान, तथा शिक्षा का अधिकार 2009 प्रमुख है, इन सभी का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा में शत–प्रतिशत नामाकंन तथा इसकी गुणात्मक वृद्धि करना है। देश में निः शुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक होने से छात्र नामाकंन में वृद्धि देखकर शोधार्थी ने जनपद रुद्रप्रयाग के जखोली विकासखण्ड के प्राथमिक विद्यालयों का सत्र 2013–2014 से 2017–2018 तक नवीन नामांकन के संदर्भ में अध्ययन किया है।

अध्ययन का महत्व

पूर्व में किये अध्ययनों से सामने आता है कि समय के साथ देश के विभिन्न भागों में शिक्षा के क्षेत्र में विकास हुआ है। कालान्तर में शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की उपलब्धि, नामांकन, धारण एवं विद्यालयों का गणनात्मक एवं गुणात्मक विकास हुआ है। शोधकर्ता के गृह जनपद रूद्रप्रयाग के जखोली विकासखण्ड में प्राथमिक स्तर पर नामांकन के संदर्भ में विगत कुछ वर्षों की स्थिति क्या है, को जानने के लिये यह अध्ययन सम्पादित किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जखोली विकासखण्ड में प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के नवीन नामांकन का अध्ययन करना।
2. जखोली विकासखण्ड में प्राथमिक विद्यालयों में अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के नवीन नामांकन का अध्ययन करना।

अध्ययन की अवधारणायें

1. जखोली विकासखण्ड में प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के नवीन नामांकन बढ़ा है।
2. जखोली विकासखण्ड में प्राथमिक विद्यालयों में अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के नवीन नामांकन बढ़ा है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है।

समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन में समष्टि के अन्तर्गत रुद्रप्रयाग जनपद के जखोली विकास खंड के अन्तर्गत समस्त राजकीय प्राथमिक विद्यालयों से है जिसकी संख्या 173 है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है। इसके अन्तर्गत जखोली विकास खण्ड के 30 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रुप में स्वनिर्मित आंकड़ा संग्रह प्रपत्र का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी के अन्तर्गत प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1
सामान्य जाति के छात्र–छात्राओं का वर्षवार नवीन नामांकन

सत्र	बालक	प्रतिशत	बालिका	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
2013-14	54	45%	65	55%	119	100%
2014-15	54	45%	65	55%	119	100%
2015-16	51	51%	49	49%	100	100%
2016-17	61	43%	81	57%	142	100%
2017-18	56	50%	57	50%	113	100%
कुल	**276**	**47%**	**317**	**53%**	**593**	**100%**

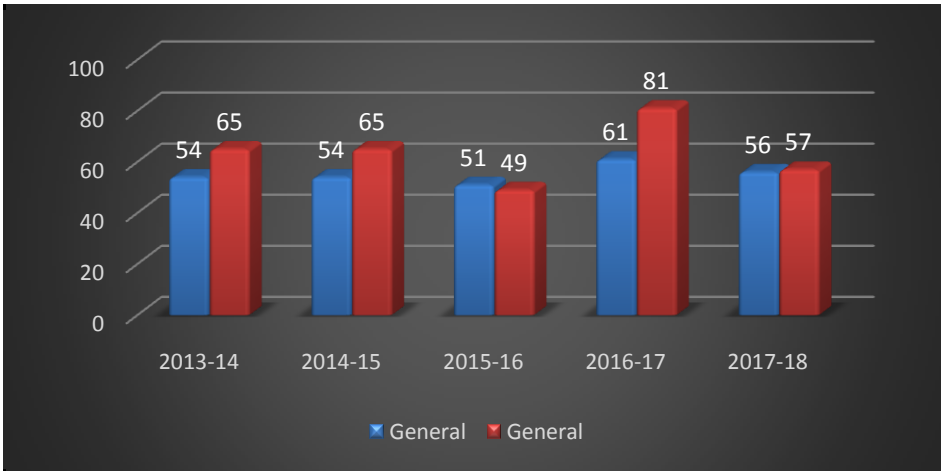

तालिका संख्या 1 व्यक्त करती है कि जखोली विकासखण्ड के प्राथमिक विद्यालयों में 2013–2014 में 54 अर्थात 45 प्रतिशत बालक और 65 अर्थात 55 प्रतिशत बालिकाओं ने नवीन नामांकन करवाया। सत्र 2014–15, 2015–16, 2016–17 एवं 2017–18 में नवीन नामांकन बालकों का क्रमशः 54 अर्थात 45 प्रतिशत, 51 अर्थात 51 प्रतिशत, 61 अर्थात 43 प्रतिशत और 56 अर्थात 50 प्रतिशत् है। उपरोक्त सत्रों में बालिकाओं का नवीन नामांकन क्रमशः 65 अर्थात 55 प्रतिशत, 49 अर्थात 49 प्रतिशत, 81 अर्थात 57 प्रतिशत और 57 अर्थात 50

प्रतिशत् है। सत्र 2013–2014 से सत्र 2017–2018 तक बालकों का कुल नवीन नामांकन 276 अर्थात 47 प्रतिशत एवं बालिकाओं का कुल नवीन नामांकन 317 अर्थात 53 प्रतिशत है।

तालिका संख्या–2

अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं का वर्षवार नवीन नामांकन

सत्र	बालक	प्रतिशत	बालिका	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
2013-14	37	49%	38	51%	75	100%
2014-15	43	53%	38	47%	81	100%
2015-16	42	57%	32	43%	74	100%
2016-17	40	61%	26	39%	66	100%
2017-18	38	49%	40	51%	78	100%
कुल	200	53%	174	47%	374	100%

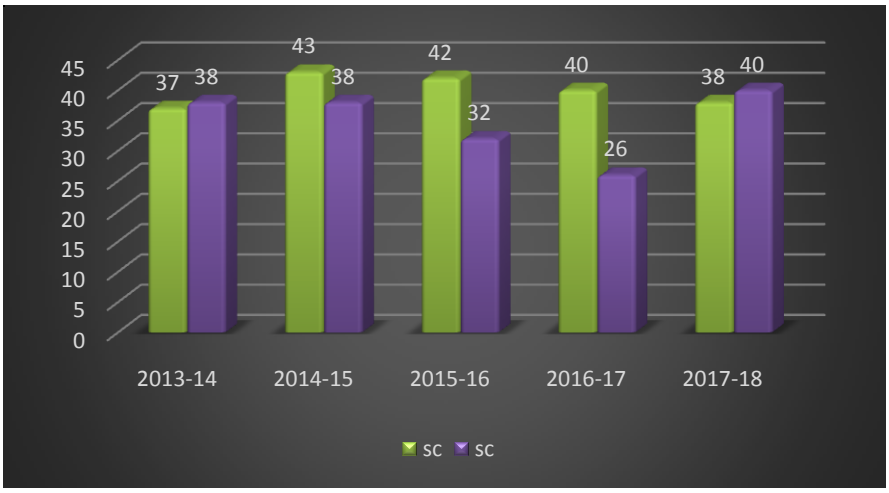

तालिका संख्या 1 व्यक्त करती है कि जखोली ब्लाक के प्राथमिक विद्यालयों में 2013–2014 में 37 अर्थात 49 प्रतिशत अनुसूचित जाति के बालक और 38 अर्थात 51 प्रतिशत अनुसूचित जाति की बालिकाओं ने नवीन नामांकन करवाया। सत्र 2014–15, 2015–16, 2016–17 एवं 2017–18 में नवीन नामांकन बालकों का क्रमशः 43 अर्थात 53 प्रतिशत, 42 अर्थात 57 प्रतिशत, 40 अर्थात 61 प्रतिशत और 38 अर्थात 49 प्रतिशत् है। उपरोक्त सत्रों में बालिकाओं का नवीन नामांकन क्रमशः 38 अर्थात 47 प्रतिशत, 32 अर्थात 43 प्रतिशत, 26 अर्थात 39 प्रतिशत और 51 अर्थात 50 प्रतिशत् है। सत्र 2013–2014 से सत्र 2017–2018 तक बालकों का कुल नवीन नामांकन 200 अर्थात 53 प्रतिशत एवं बालिकाओं का कुल नवीन नामांकन 174 अर्थात 47 प्रतिशत है।

निष्कर्ष

1. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 में क्रमशः 54, 54, 51, 61, 56 बालकों का नवीन नांमाकंन हुआ।
2. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 में क्रमशः 65, 65, 49, 81, 57 बालिकाओं का नवीन नांमाकंन हुआ।
3. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 में क्रमशः 119, 119, 100, 142, 113 छात्र–छात्रायें नांमाकिंत हई।
4. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 तक केवल एक बार 2016–17 में अन्य सत्रों की तुलना में नवीन नांमाकंन अधिक हुए।
5. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 में क्रमशः 37, 43, 42, 40, 38 अनुसूचित जाति के बालकों का नवीन नांमाकंन हुआ।
6. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 में क्रमशः 38, 38, 32, 26, 40 अनुसूचित जाति के बालिकाओं का नवीन नांमाकंन हुआ।
7. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 में क्रमशः 75, 81, 74, 66, 78 अनुसूचित जाति के छात्र–छात्रायें नांमाकिंत हई।
8. सत्र 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 तक केवल एक बार 2014–15 में अन्य सत्रों की तुलना में नवीन नांमाकंन अधिक हुए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मालवीय, राजीव (2011): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन प्रथम संस्करण

शर्मा, आर0ए0 (2012): शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो

Kumar, Anup and Raj, Anuj (May 2015): A Study of the Development of Primary Education in Dehradun district (Uttrakhand) from 2000 to 2011. International Journal of Research in Economics and social science, Vol 5/5

बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद (2016): उत्तराखण्ड समस्त ज्ञानकोष, देहरादून, बिनसर पब्लिकेशन

www.dise.in

schooleducation.uk.gov.in